सङ्गणाधवम्
शास्त्री-III

04.10.20
1

अथ चरसंस्काराद्यानयनप्रकारो लिख्यते —

स्यात्सायनोष्णांशुभुजर्क्षसङ्ख्यचरार्द्धयोगो लवभोग्यघातात्।
खाग्न्याप्तियुक्तेस्तु चरं धनर्णे तुलाजषट्के तपनेऽन्यथास्ते ॥
देयं तच्चरमरुणे विलिप्तिकासु
मद्येन्दौ द्विगुणनवोद्धृतं कलासु।
भाप्तं तद्द्युमणिफलं लवेऽथ वेद-
पक्षपक्षोनः खरसाहृतः शकाऽयनांशाः ॥

अन्वयः- सायनोष्णांशुभुजर्क्षसङ्ख्यचरार्द्धयोगः लवभोग्यघातात्, खाग्न्याप्तियुक्तः चरं स्यात्। तत् चरं तुलाजषट्के तपने धनर्णं स्यात्। अस्ते अन्यथा भवेत्।

तत् चरम् अरुणे विलिप्तिकासु देयम्। तदेव द्विगुणनवोद्धृतम् मद्येन्दौ कलासु भाप्तं यत् द्युमणिफलं तत् अपि लवे, अथ शकः वेदपक्षपक्षोनः, खरसहृतः, अयनांशाः स्युः।

तारा- चरसाधनम्- सायनरवेः यो हि भुजः स्यात् स राशिसङ्ख्यासमानचरखण्डयोगः कर्तव्यः, स योगः लवभोग्य घातात् अंशादिभोग्यखण्डगुणनात् खाग्न्याप्तिः युक्तः त्रिंशत्-कलाविधसहितः, चरं स्यात्। तच्चरं तुलाजषट्के तपने धनर्णं तत् क्रमेण यथा - तुलादिषड् राशिस्थिते सूर्ये धनं, मेषादौ ऋणं भवतीति। अस्ते सूर्यास्तसमये तद् अन्यथा पूर्वोक्तप्रकाराद् विपरीतं भवति। तद्यथा- तुलादौ, ऋणं मेषादौ धनम्भवतीति विशेषोऽर्थः।

चरफलसंस्कारम् – तत् पूर्वपद्यवर्णितं, चरम अरुणे सूर्ये, विलिप्तिकासु विकलासु, देयं योज्यम्। तदेव चरं द्विगुणनवोद्धृतं द्विगुणितं नवभिर्विभज्य च यल्लब्धिरूपेण लब्धं, मद्येन्दौ कलासु देयं योज्यं भवति, अयमेव चरसंस्कारः, द्वितीयफल

P.T.O

अथ दिनमानादिकानयनम्- अक्षांशानयनञ्च —

गोलौ स्तः सौम्ययाम्यौ क्रियघटरसभे खेचरेऽथायने ते,
नक्रात्कर्काच्च षड्भेऽथ चरपलयुतोनास्तु पञ्चेन्दुनाड्यः।
घस्रार्द्धं गोलयोः स्यात्तदयुतरवगुणाः स्यान्निशार्द्धञ्च याम्या-
च्छायेषुघ्न्यक्षभायाः क्रुतिदशमलवोना यमाशाः पलांशाः॥

अन्वयः - खेचरे क्रियघटरसभे सौम्ययाम्यौ गोलौ स्तः। अथ नक्रात् कर्कात् च षड्भे ते अयने स्तः। अथ तु पञ्चेन्दुनाड्यः चरपलयुतोनाः। तदा घस्रार्द्धं स्यात्। तदयुतरवगुणाः निशार्द्धं स्यात्। अथ तु इषुघ्नी अक्षभायाः अक्षच्छाया क्रुतिदशमलवोना, यमाशापलांशाः।

तारा - खेचरे सायनसूर्ये, क्रियघटरसभे मेषादिषड्राशिस्थे तथा तुलादिषड्राशिस्थे क्रमेण- सौम्य-याम्यगोलौ उत्तरदक्षिण गोलौ स्तः। अथ नक्रात् मकरात् कर्कात् कीटात्, षड्भे च ते पूर्वोक्ते उत्तरदक्षिणायने स्तः।

अत्र भास्कराचार्यैः 'नाड्याह्वयाद्युत्तरयाम्यभागौ गोलस्य तावुत्तरयाम्यगोलौ"। अर्थात् मेषादिकन्यान्तानां नाडीवृत्ताद् उत्तरस्थितत्वाद् उत्तरगोलः, तुलादिषण्णां राशीनां नाडीवृत्ताद् दक्षिणत्वाद् दक्षिणगोल इति व्यवस्था। अयनं नाम वर्त्म, तदपि द्विधा विभक्तं ज्योतिषशास्त्रे - मकरस्थसूर्यादारभ्य क्रान्तिवशात् सूर्यस्योत्तरवर्त्माश्रयणं सौम्यायनम् उत्तरायणं वा तथा कर्कस्थ-सूर्यादारभ्य क्रान्तिवशाद् दक्षिणवर्त्माश्रयणं दक्षिणायनं याम्या-यनं वा।

अथ तु सौम्ययाम्यगोलक्रमेण पञ्चेन्दुनाड्यः पञ्चदशघटिकाः चरपलयुतोनाः सौम्यायने चरपलयुताः, याम्यायने चरपलहीनाः

p.T.O

संस्कारश्च, तदनु भाप्तं नक्षत्रसङ्ख्याभिः 26 आप्तं भक्तं, यद् द्युमणिफलं सूर्यमन्दफलं, तदपि लवे अंशे, देयम्। अथ तदनन्तरं शाकः स्वेषुशाकः, वेदाब्धमवह्मून: ४४४ सङ्ख्यया रहितः, खरसाहतः चरख्या ६० भक्तः, अयनांशाः भवन्ति।

भावार्थः - सायन सूर्य की भुज लाने की रीति के अनुसार केन्द्र से भुज का ग्रहण करें। वह भुज यदि राशि शून्य (अर्थात् राशि के स्थान पर कोई अङ्क न) हो, तो राशि को छोड़कर केवल अंशादि को प्रथम चरखण्ड से गुणा करें। यदि भुज में 1 राशि हो, तो राशि को छोड़कर द्वितीय चरखण्ड से गुणा करें और यदि भुज में 2 राशि हो, तो राशि को छोड़कर केवल अंशादि को तृतीय चरखण्ड से गुणा करें। जो गुणनफल हो, उसमें 30 का भाग दें। जो लब्धि प्राप्त हो, उसमें जिस चरखण्ड (प्रथम, द्वितीय, तृतीय) से गुणा किया हो, उसमें पहला चरखण्ड जोड़ देने से चर होता है।

वह चर सायन मेषादि ६ राशि से कम हो, तो ऋण होता है और यदि ६ राशि से अधिक तुलादि ६ राशि के भीतर हो, तो धन होता है। यदि सायंकालिक ग्रह की सिद्धि करनी हो, तो उक्त रीति के विपरीत चर का ग्रहण करें। अर्थात् सायन सूर्य मेष आदि ६ राशि के भीतर हो, तो धन और तुला आदि ६ राशि के भीतर हो, तो ऋण समझें।

उक्त चर यदि धन हो, तो मन्दस्पष्ट सूर्य की विकलाओं में जोड़ दें और ऋण हो, तो घटा दें। ऐसा करने से स्पष्टसूर्य होता है। चर को 2 से गुणा करके ५ का भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हो, उसको धन अथवा ऋण चर के समान करें। इसको मन्दस्पष्ट सूर्य की कलाओं में जोड़ दें। इसको चरसंस्कार और द्वितीयफलसंस्कार भी कहते हैं।

विधेयाः। तदा घस्रार्द्धं दिनार्द्धं स्यात्। तद्रहितखगुणाः दिनार्द्धो नत्रिंशद्घटिकाः, निशार्द्धं रात्र्यर्द्धं भवति। अथ तु इषुघ्नी पञ्चगु-णिता, अक्षच्छाया पलभा, अक्षभायाः पलभायाः, कृतिदशमलवोना तदीयवर्गस्य दशमांशहीना, यमाशाः दक्षिणाशाः, पलांशाः अक्षांशाः स्युः।

भावार्थः- सायनसूर्य मेष से लेकर कन्या तक की राशियों में हो, तो उसको उत्तरगोल अथवा सौम्यगोल कहते हैं और यदि सायनसूर्य तुला से लेकर मीन तक की किसी भी राशि में हो तो उसे दक्षिणगोल या याम्यगोल कहते हैं।

इसी प्रकार यदि सायनसूर्य मकरराशि से मिथुनराशि तक किसी राशि में हो, तो उसको उत्तरायण या सौम्यायन कहते हैं और यदि सायनसूर्य कर्कराशि से धनुराशि तक किसी राशि में हो, तो उसको दक्षिणायन या याम्यायन कहते हैं।

"स्यात् सायनोष्णांशु" पद्य के अनुसार यदि सायनसूर्य उत्तरगोलीय हो, तो पलात्मकचर को 15 घड़ी में जोड़ने पर योगफल दिनार्द्ध होता है। और यदि सायन-सूर्य दक्षिणगोलीय हो, तो उक्त उसी पलात्मकचर को 15 घड़ी में से घटा दे। शेष दिनार्द्ध होता है। उन दोनों प्रकारों के दिनार्द्धों को 30 घड़ी में से घटा देने पर जो शेष रहे, वह रात्र्यर्द्ध होता है।

दिनार्द्ध को 2 से गुणा करने पर दिनमान होता है और रात्र्यर्द्ध को 2 से गुणा करने पर रात्रिमान होता है। दिनमान और रात्रिमान का योग करने से अहोरात्रमान होता है।

पलभा को 5 से गुणा करने पर जो गुणनफल प्राप्त हो, उसमें पलभा के वर्ग का 10 वाँ अंश घटा देने पर जो शेष रहे उसे अक्षांश कहते हैं। अक्षांश सदैव दक्षिण होता है, क्योंकि विषुवत् वृत्तरेखा भारत के दक्षिण में है।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।